

आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के  
अकादमिक एवं प्रशासनिक प्रशिक्षण केंद्र  
द्वारा गुरु दक्षता कार्यक्रम प्रारंभ

**29 मार्च तक आर्यभट्ट ज्ञान  
विश्वविद्यालय में चलेगी मूक यानी मैसिव  
ओपन ऑनलाइन कोर्स तैयार करने की  
ट्रेनिंग**



**पटना. 25 मार्च 2025.** भारत सरकार की शिक्षा नीति के अनुसार सभी के लिए शिक्षा का लक्ष्य पूरा करने के लिए किसी भी शिक्षक को तकनीकी के साथ आगे बढ़ना चाहिए। इससे उसकी पहुंच समाज के ऐसे वर्ग तक बनती है जो सबसे पिछली कतार में है। इसके लिए मूक प्रोडक्शन सबसे प्रभावी तरीका है। यह फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम इसी उद्देश्य की पूर्ति करेगा। यह बातें कहीं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इगू), नई दिल्ली के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रोडक्शन केंद्र (ईएमपीसी) निदेशक डॉ. के. डी. प्रसाद ने। वह मूक प्रोडक्शन पर आधारित एफडीपी के शुभारंभ अवसर पर अपना वक्तव्य दे रहे थे। गौरतलब है कि मूक प्रोडक्शन के महत्व और आवश्यकता को देखते हुए आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो० (डॉ) शरद कुमार यादव की प्रेरणा और मार्गदर्शन से मूक पर आधारित एक गुरु दक्षता कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। 25 मार्च से आयोजित यह कार्यक्रम भारतीय विश्वविद्यालय संघ तथा आर्यभट्ट ज्ञान



विश्वविद्यालय के द्वारा स्थापित अकादमिक एवं प्रशासनिक विकास केंद्र की ओर से आयोजित किया जा रहा है.

आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के स्मार्ट क्लासरूम में 25 मार्च को मूक प्रोडक्शन पर आधारित फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का

शुभारंभ किया गया। विश्वविद्यालय की एआईयू-एकेयू-एएडीसी कोआर्डिनेटर तथा एफडीपी संयोजक डॉ मनीषा प्रकाश ने मुख्य वक्तागण और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि बिहार को उच्च शिक्षा जगत में अग्रणी बनाने के लिए सभी शिक्षकों को मूक प्रोडक्शन को स्वीकार करना समय की मांग



है। उन्होंने कहा कि आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा बिहार में उच्च शिक्षा में सशक्तिकरण के लिए बिहार में दूसरी बार इतने बड़े पैमाने पर प्रतिभागियों की सहभागिता के साथ मूक प्रोडक्शन पर प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। यह विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है। विश्वविद्यालय जल्द ही मूक कंटेंट का प्रस्ताव तैयार करेगा। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का संचालन फैकल्टी डॉ संदीप कुमार दुबे द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), नई दिल्ली के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रोडक्शन केंद्र (ईएमपीसी) निदेशक डॉ. के. डी. प्रसाद ने मूक प्रोडक्शन की तकनीक और स्वयं प्लेटफार्म की विशेषताओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आज आरटीआई यानी रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट के बिना शिक्षा का विस्तार संभव नहीं है। मूक प्रोडक्शन तभी सफल हो सकता है जब उसमें ई ट्यूटोरियल, ई-कंटेंट, डिस्कशन फोरम, मूल्यांकन, रोजगारपरकता, मूल्यनिर्माण आदि उपागम समाहित हों। उन्होंने वीडियो प्रोडक्शन के विषय में



भी बताया और कहा कि आने वाले समय में हो सकता है कि स्टूडेंट क्लासरूम में हो ही नहीं वो ऑनलाइन ही अपनी पढ़ाई पूरी करे, अब वो समय चल गया है जब सिर्फ गेस और गाइड से पढ़ाई होती थी।

एफडीपी के पहले दिन के अंतिम सत्र में आईसीएमआर - आरएमआरआईएमएस,

पटना के वैज्ञानिक, डॉ. यश पॉल शर्मा ने वीडियो प्रोडक्शन के आधुनिकतम स्वरूपों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक शिक्षक को अपनी तकनीकी दक्षता बढ़ाने के लिए प्रयास करना बहुत जरूरी है। उन्होंने मूक प्रोडक्शन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न डिजीटल तकनीकी के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने मूक प्रोडक्शन में किसी अन्य द्वारा तैयार किए गया कंटेंट इस्तेमाल करने के कानूनी पहलुओं के बारे में जानकारी दी गई। कॉपीराइट तथा क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेन्स के विषय में उन्होंने विस्तार से बताया। इस दौरान प्रतिभागियों से आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल संबंधी कुछ गतिविधि भी करवाई गई। जिसमें ऑगमेन्टेड रियलिटी यानी एआर का प्रयोग शामिल रहा। साथ ही वर्चुअल, मिक्स्ड तथा एक्स्टेंडेड रिएलिटी के विषय में भी बताया गया।

उद्घाटन सत्र में आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री रामजी सिंह भी उपस्थित रहें। इस मौके पर कुलसचिव ने प्रतिभागियों को एफडीपी का लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि बिना तकनीकी ज्ञान के शिक्षण कार्य को प्रभावी नहीं बनाया जा सकता।